HINDEE GRAMMAR.

THE INSTRUCTION OF THE

पादरी आदम साहिब कर्के
रचित
बालकोंके शिखानेके लिये
प्रश्नोत्तरकी रीतिसे स्पष्ट हिन्दी भाषाका
व्याकरण।

A

HINDEE GRAMMAR.

FOR

THE INSTRUCTION OF THE YOUNG,

IN THE

Form of easy Questions and Answers,

BY

THE REV. M. T. ADAM.

Calcutta:

PRINTED AT THE PRESS OF BRAJAMOHUN CHUCKERBUTTEE, FOR THE CALCUTTA SCHOOL BOOK SOCIETY, AND SOLD AT THE DEPOSITORY, LOWER CIRCULAR ROAD.

1837.

Ist. Ed.	1827.	1000 Copies.
2nd. Ed.	1837.	1000 ditto.

सूची पत्र।

सूची पत्र।

व्याकरण।

प्रथम खण्ड।

वर्णके विषयमें।

१ पाठ।

१ प्रश्न। हिन्दी भाषाकी वर्णमाला कै प्रकारसे विभाग किई गई है?

उत्तर। हिन्दी वर्णमालामें दो भाग हैं, अ आदि अः विसर्गान्त अक्षर व स्वर कहे जाते हैं, यह एक भाग; और क आदि क्ष पर्य्यन्त जो अक्षर वे व्यञ्जन कहे जाते हैं, यह दूसरा भाग है।

२ प्र। कौनसे अक्षरोंको स्वर कहते हैं?

उ। अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ
ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः,
इन् सोलह अक्षरोंको स्वर कहते हैं।

३ प्र। व्यञ्जन अक्षर किन्को कहते हैं?

उ। क ख ग घ ङ।
च छ ज झ ञ।
ट ठ ड ढ ण।
त थ द ध न।
प फ ब भ म।
य र ल व ——।
श ष स ह क्ष,
इन् चौंतीस अक्षरोंको व्यञ्जन कहते हैं।

४ प्र। स्वरोंके मध्यमें कौनर से वर्ण ह्रस्व कहे जाते हैं?

उ। अ इ उ ऋ ऌ, स्वरोंके मध्यमें येही पांच वर्ण ह्रस्व कहे जाते हैं।

५ प्र। स्वरोंके मध्यमें दीर्घ वर्ण किन्को कहते हैं?

उ। आ ई ऊ ॠ ॡ ए ऐ ओ औ, स्वरोंके मध्यमें दीर्घ वर्ण इन्को कहते हं।

---

२ पाठ।

१ प्र। स्वर वर्णोंका कोई औरभी आकार है?

उ। हाँ, व्यञ्जनोंके साथ मिलनेको औरभी आकार है; जैसा,

ा ि ी ु ू ृ ॄ ॢ ॣ े ै ो ौ ं :

२ प्र। स्वरोंमें व्यञ्जनका मेल होनेसे कैसा स्वरूप होता है?

उ। व्यञ्जन और स्वर इन् दोनोंके मिलनेसे ऐसा स्वरूप होता है; जैसा कि,

क का कि की कु कू कृ कॄ

कॢ के कै को कौ कं कः।

सब व्यञ्जनोंका स्वरोंके साथ इसी प्रकारसे संयोग होता है, और इसीको वर्त्तनी वा बनानभी कहते हं।

३ प्र। व्यञ्जनोंके मध्यमें वर्ग कित्ने हं?

उ। व्यञ्जनोंमें क वर्गसे प वर्गतक पांच वर्ग हैं; जैसा,

क ख ग घ ङ। ये पांच क वर्ग।

च छ ज झ ञ। ये पांच च वर्ग।

ट ठ ड ढ ण। ये पांच ट वर्ग।

त थ द ध न। ये पांच त वर्ग।

प फ ब भ म। ये पांच प वर्ग।

४ प्र। अल्पप्राण किन् वर्णोंको कहते हैं?

उ। एक एक वर्गके पहिले और तीसरे वर्णको अल्पप्राण कहते हैं; जैसा, क, ग, च, ज, इत्यादि।

५ प्र। महाप्राण किन् वर्णोंको कहते हैं?

उ। प्रत्येक वर्गके दूसरे और चौथे वर्णको महाप्राण कहते हैं; जैसा, ख, घ, छ, झ, इत्यादि।

---

३ पाठ।

१ प्र। अनुनासिक अक्षर कितने हैं?

उ। ङ ञ ण न म,

ये पांच अक्षर अनुनासिक हैं।

२ प्र। सानुनासिक किसको कहते हैं?

उ। चन्द्रबिन्दु ँ और अनुस्वार ं ये दोनोंको सानुनासिक कहते हैं; जैसा, साँझी, हंस।

३ प्र। वर्णमालाके अक्षरोंका उच्चारण किन् २ स्थानोंसे होता है?

उ। कण्ठ, तालु, मूर्द्धा, दन्त, ओष्ठ, इन् पांच स्थानोंसे सब अक्षरोंका उच्चारण होता है।

४ प्र। कण्ठमें किन् २ अक्षरोंका उच्चारण होता है?

उ। अ आ ए ऐ ओ औ ह क ख ग घ ङ, इन् सब अक्षरोंका उच्चारण कण्ठमें होता है, इसीलिये इनको कण्ठ्य कहते हैं।

५ प्र। तालुवेमें किन् २ अक्षरोंका उच्चारण होता है?

उ। इ ई च छ ज झ ञ य श ए ऐ, इन सब अक्षरोंका उच्चारण तालुवेमें होता है, इसीलिये इनको तालव्य कहते हैं।

६ प्र। मूर्द्धामें किन्२ अक्षरोंका उच्चारण होता है?

उ। ऋ ष ट ठ ड ढ ण र ष, इन् सब अक्षरोंका उच्चारण मूर्द्धामें होता है, इसीलिये इनको मूर्द्धन्य कहते हैं।

७ प्र। दांतमें किन्२ अक्षरोंका उच्चारण होता है?

उ। लृ लॄ त थ द ध न ल स व, इन् सब अक्षरोंका उच्चारण दांतमें होता है, इसलिये इनको दन्त्य कहते हैं।

८ प्र। ओष्ठमें किन्२ अक्षरोंका उच्चारण होता है?

उ। उ ऊ प फ ब भ म व ओ औ, इन् सब अक्षरोंका उच्चारण ओष्ठमें होता है, इसलिये इनको ओष्ठ्य कहते हैं।

४ पाठ।

१ प्र। व्यञ्जन अक्षरोंमे अन्तस्थ वर्ण किन्को कहते है?

उ। य र ल व, इन् चार अक्षरोंको अन्तस्थ कहते हैं।

२ प्र। व्यञ्जनोंके मध्यमें उष्मा वर्ण किन्को कहते हैं?

उ। श ष स ह, इन् चार अक्षरोंको उष्मा वर्ण कहते हैं।

३ प्र। वर्णमालाके मध्यमें किन्२ अक्षरोंको फला कहते हैं?

उ। य र ल व न म ऋ लृ र, इनका दूसरा स्वरूप ऐसा य् ‍र् ल् व् न् म् ृ ॢ ॅ, इन् सब अक्षरोंको फला कहते हैं।

४ प्र। फलाका औरर अक्षरोंके साथ मेल होनेसे, कैसा आकार होता है?

उ। क्यारी, ग्रहण, क्लीव, ध्वजा, ज्ञान, रुक्म, वृष्टि, क्लृ, कर्म, इस प्रकारसे अनेकन् शब्दोंमें ऐसा संयोग होता है।

५ पाठ।

१ प्र। किन् २ अक्षरोंमें अनुनासिक वर्णोंका मिलाप होनेसे, सानुनासिक उच्चारण होता है?

उ। एक २ अनुनासिक अक्षर केवल अपने २ वर्गके एक २ अक्षरमें मिलकर सानुनासिक उच्चारण होता है; जैसा कि,

ङ्क	ङ्ख	ङ्ग	ङ्घ	ङ्ङ।
ञ्च	ञ्छ	ञ्ज	ञ्झ	ञ्ञ।
ण्ट	ण्ठ	ण्ड	ण्ढ	ण्ण।
न्त	न्थ	न्द	न्ध	न्न।
म्प	म्फ	म्ब	म्भ	म्म।

अधिक तौ, ङ, र, छुड़ायकर अन्तस्थ वर्ण और उष्म वर्ण और ह, इन् सबमें मिलके सानुनासिक होते हैं; जैसा,

ङ्य	—	ण्य	न्य	—
ङ्व	ञ्व	ण्व	न्ह	म्ह।

२ प्र। व्यञ्जनोंमें संयुक्त अक्षर सब कुछ्आँ और कितने हैं?

उ।	क्ष	त्र	ट्र	ह्न	ज्ञ।
	स्र	स्व	ज्र	श्व	श्र।
	ष्ट	ष्ठ	ह्न	ह्ण	थ्य।
	क्त	थ्य	ब्द	ब्ब	क्र।
	स्प	स्फ	द्व	ह्र	श्च।
	ह्य	क्र	ह्र	ह्र	—
	द्ध	द्म	द्व	द्द	द्ध।

ये चौंतीस अक्षर संयुक्त हैं।

दूसरा खण्ड।

संज्ञाके विषयमें।

१ पाठ।

१ प्र। संज्ञा किसको कहते हैं ?

उ। वस्तुके नाममात्रको संज्ञा कहते हैं; जैसा, मनुष्य, वृक्ष, जल, थल, पर्वत, पुस्तक, कागज, कलम, इत्यादि।

२ प्र। संज्ञा कितने प्रकारोंसे भेद किई जाती है ?

उ। प्रकृत नामवाचक, जातिवाचक, भाववाचक, और क्रियावाचक; इन चार प्रकारोंसे संज्ञा भेद किई जाती है।

३ प्र। प्रकृत नामवाचक किसको कहते हैं ?

उ। प्रत्येक मनुष्यके नाम वा नगर वा देश नदी वा पर्वत इत्यादिके नामको प्रकृत नामवाचक कहते हैं; जैसा, राममोहन, पटना, कुरक्षेत्र, गङ्गा, विन्ध्य।

४ प्र। जातिवाचक किसको कहते हैं ?

उ। मनुष्य, पशु, पक्षी, इत्यादि सब शब्दोंको जातिवाचक कहते हैं, अर्थात् मनुष्य शब्दसे सब मनुष्य समझे जाते हैं, पशु शब्दसे सब पशु, और पक्षी शब्दसे सब पक्षी समझे जाते हैं।

५ प्र। भाववाचक किसको कहते हैं ?

उ। गुणवाचक शब्दके परे त्व, और ता, ये दो प्रत्यय होनेसे उसको भाववाचक कहते हैं; जैसा गुणवाचक उत्तम शब्दके परे त्व और ता ये प्रत्यय होनेसे उत्तमत्व वा उत्तमता।

६ प्र। परन्तु जातिवाचक शब्दसेभी कभी२ भाव वाचककी रचना होती है क्या नहीं ?

उ। हाँ, जातिवाचक शब्दसे परे केवल त्व प्रत्यय करनेसे, भाववाचककी रचना होती है; जैसा, जातिवाचक मनुष्य शब्दके परे त्व प्रत्यय करनेसे मनुष्यत्व और ईश्वरत्व।

७ प्र। क्रियावाचक किसको कहते हैं?

उ। धात्वर्थ मात्रको क्रियावाचक कहते हैं; जैसा, करना, सोना, जाना, खाना, आना, रखना, सुनना, सूंघना, देखना, बोलना, इत्यादि।

८ प्र। और किसी प्रकारसेभी संज्ञा अलग किई गई हैं, क्या नहीं?

उ। हाँ, प्राणिवाचक और अप्राणिवाचक, इन् दो भागोंमे अलग किई गई है।

९ प्र। प्राणिवाचक किन्को कहते हैं?

उ। जीवधारी सभी प्राणिवाचक कहावते हैं; जैसा, जीव, जन्तु, कीट, पतङ्ग, आदि।

१० प्र। अप्राणिवाचक किन्को कहते हैं?

उ। जीव विना सभी अप्राणिवाचक कहावते हैं; जैसा मट्टी, पाषाण, पर्वत, आदि।

---

२ पाठ।

लिङ्गके विषयमें।

१ प्र। संज्ञाका विभाग कितने लिङ्गोंमे किया गया है?

उ। पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग, इन् तीन लिङ्गोंमें किया गया है; जैसा, नर, नारी, ज्ञान।

२ प्र। पुंलिङ्गके बोधक शब्द कौनसे हैं?

उ। पुरुष बोधक व्यञ्जनान्त वा स्वरान्त सभी शब्द पुंलिङ्गके बोधक हैं; जैसा मनुष्य, हाथी, घोड़ा, बैल।

३ प्र। स्त्रीलिङ्गके बोधक शब्द कौनसे हैं?

उ। स्त्रीके बोधक सभी शब्द स्त्रीलिङ्गके बोधक हैं; जैसा नारी, हथिनी, घोड़ी, गाय्य।

४ प्र। आ ई नी ति, ये प्रत्यय जिन् शब्दोंके अन्तमें होंय वे स्त्रीलिङ्ग हैं क्या नहीं?

उ। हाँ हैं, जैसा, माता, चातुरी, युवती, सम्मति।

५ प्र। कोई अकारान्त वा हलन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द है क्या नहीं?

उ। हाँ है; जैसा, बात, घास, धाम, जुगत्, सम्पत्, विपत्, कचियाहठ्, इत्यादि।

६ प्र। अकारान्त वा हलन्त जो शब्द उससे परे आ और ई प्रत्यय होनेसे स्त्रीलिङ्ग वह होय क्या नहीं?

उ। हाँ होय; जैसा, भूख भूख्य, चचल चचला, वा गरम् गरमी, नरम् नरमी, इत्यादि।

७ प्र। सब दीर्घ आकारान्त पशु पक्षी वाचक शब्दसे दीर्घ ई प्रत्यय होनेसे स्त्रीलिङ्ग होय क्या नहीं?

उ। हाँ; जैसा, घोड़ा, घोड़ी, गधा गधी, बिल्ला बिल्ली, मुरगा मुरगी। *

८ प्र। दीर्घ ईकारान्त शब्दसे नी प्रत्यय होनेसे, पूर्वको ह्रस्व करके स्त्रीलिङ्ग होय क्या नहीं?

उ। हाँ होय; जैसा, हाथी हथिनी, हस्ती हस्तिनी, मानी मानिनी, मानी मानिनी।

९ प्र। नपुंसक लिङ्ग किसको कहते हैं?

उ। संस्कृतकी रीतिसे स्त्रीलिङ्ग पुलिङ्ग भिन्न जो शब्द उसको

---

* हरिन हरिनी, मग मगी, भेड़ा भेड़ी, बकरा बकरी, काका काकी, मामा मामी।

नपुंसकलिङ्ग कहते हैं; जैसा, जल, फल, धन, वन, इत्यादि। परन्तु हिन्दी भाषामें नपुंसकलिङ्गका बोधक कोई प्रत्यय नहीं है।

३ पाठ।

कारकके विषयमें।

१ प्र। कितने कारकोंमें संज्ञाकी घटना होती है?

उ। कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण और सम्बोधन *, इन् आठ कारकोंमें संज्ञाकी घटना होती है।

२ प्र। व्यञ्जनान्त पुंलिङ्ग संज्ञाका कारक कैसा है?

उ। वह् इस् प्रकारका है।

	एक वचन।		बहु वचन।
कर्त्ता,	बालक	कर्त्ता,	बालके
कर्म,	बालकको	कर्म,	बालकन् वा -कों, -को
करण,	बालककर्के	करण,	बालकन् वा-कों,-कर्के
सम्प्रदान,	बालकके लिये वा बालकको	दसम्प्रदान,	बालकन्, वा-कों के लिये, वा बालकन् वा-कों,-को
अपादान,	बालकसे	अपादान,	बालकन् वा-कोंसे
सम्बन्ध,	बालकका -के, -की	सम्बन्ध,	बालकन् वा -कोंका, -के-की
अधिकरण,	बालकमें वा बालकके विषय	अधिकरण,	बालकन् वा कोंमें, बालकन् वा -कोंके विषय
सम्बोधन,	हे बालक	सम्बोधन,	हे बालको †

* सम्बोधन पदको कारक नहीं कहते हैं, क्योंकि भाषामें सम्बोधनको कारकत्व नहीं पाया जाता, परन्तु संस्कृतके अनुसारसे कोई२ मानते हैं सही; इसलिये हम उसको इसीमें लिखेंगे।

† कुकर, मोर, भूत, पिशाच, जकन, पाप, इत्यादि सब शब्दोंके कारक बालकके कारकोंकी न्याईं अभ्यास करो।

३ प्र। स्वरान्त पुल्लिङ्ग संज्ञाका कारक कैसें होता है?

उ। वह इस प्रकारसे होता है।

एक वचन।		बहु वचन।	
कर्त्ता,	लडका	कर्त्ता,	लडके
कर्म,	लडकेको	कर्म,	लडकन् वा-कों-को
करण,	लडके करके	करण,	लडकन् वा-कों करके
सम्प्रदान,	लडकेके लिये वा लडकेको	सम्प्रदान,	लडकन् वा-कोंके लिये वा लड़कन् वा-कोंको
अपादान,	लडकेसे	अपादान,	लड़कन् वा-कोंसे
सम्बन्ध,	लडकेका,-के-की	सम्बन्ध,	लड़कन् वा-कोंका,-के,-की
अधिकरण,	लडकेमें वा लडकेके विषय	अधिकरण,	लड़कन् वा-कोंमें वा लड़कन् वा-कोंके विषय
सम्बोधन,	हे लडके	सम्बोधन,	हे लड़को *

४ पाठ।

१ प्र। स्वरान्त स्त्रीलिङ्ग संज्ञामें किस प्रकारसे कारकोंकी घटना होती है?

उ। उसमें इस प्रकारसे घटना होती है।

* बेटा, घोडा, छोडा, सोना, सियाना, भेडा, इत्यादि सब शब्दोंके कारक लडकेके कारकोंकी न्याईं बनाए जानें।

एक वचन।		बहु वचन।	
कर्त्ता,	लड़की	कर्त्ता,	लड़कियाँ
कर्म,	लड़कीको	कर्म,	लड़कियों वा -कीन् को
करण,	लड़कीकर्के	करण,	लड़कियों वा -कीन् कर्के
सम्प्रदान,	लड़कीके लिये वा लड़कीको	सम्प्रदान,	लड़कियोंके वा -कीन्के लिये, वा लड़कियों वा -कीन्को
अपादान,	लड़कीसे	अपादान,	लड़कियों वा -कीन्से
सम्बन्ध,	लड़कीका के, की	सम्बन्ध,	लड़कियों वा -कीन्का के-की
अधिकरण,	लड़कीमें वा लड़कीके विषय	अधिकरण,	लड़कियों वा कीन्में वा लड़कीयां वा -कीन्के विषय
सम्बोधन,	हे लड़की	सम्बोधन,	हे लड़कियो *

२ प्र। आकारान्त स्त्रीलिङ्ग संज्ञामें कारकोंकी घटना किस प्रकारसे होती है?

उ। सो एक वचनमें ईकारान्त शब्दके समान है, परन्तु बहु वचनमें घटना इस प्रकारसे होती है; जैसा कि माता शब्द।

बहु वचन।

कर्त्ता,	माता
कर्म,	मातान्को

* मुरगी, घोड़ी, नदी, देवी, पृथ्वी, भूमी, इत्यादि शब्दोंके कारकोंको लड़कीके कारकोंकी न्याईं अभ्यास कर्ना।

करण,	मातान् कर्के
सम्प्रदान,	मातान्के लिये वा मातान्को
अपादान,	मातान्से
सम्बन्ध,	मातान्का, के, की
अधिकरण,	मातान्में वा मातान्के विषय
सम्बोधन,	हे माता *

३ प्र। अकारान्त और हलन्त स्त्रीलिङ्ग संज्ञा शब्दमें कारकों-की घटना किस् प्रकारसे होती है?

उ। एक वचनमें वेभी ईकारान्तकी समान हैं, परन्तु बहु वचनमें घटना इस् प्रकारसे होती है; जैसा कि बात शब्द।

बहु वचन।

कर्त्ता,	बातें
कर्म,	बातोंको
करण,	बातों कर्के
सम्प्रदान,	बातोंके लिये, वा बातोंको
अपादान,	बातोंसे
सम्बन्ध,	बातोंका, के, की
अधिकरण,	बातोंमें वा बातोंके विषय
सम्बोधन,	हे बातो †

४ प्र। उपमार्थमें सम्बन्ध कारकके प्रत्ययकी बदली, जो रूप शब्द, उसका प्रयोग होता है अथवा नहीं?

---

* दया, कृपा, गङ्गा, शाला, माया, इत्यादि शब्दोंके कारकोंको माता शब्दके कारकोंकी न्याईं अभ्यास करो।

† घास, धूप, धूल, भूल, कनेल, चाल, इत्यादि शब्दोंके कारकोंको बात शब्दके कारकोंकी न्याईं अभ्यास करो।

उ। हाँ, होता है; जैसा कि, समुद्र रूप विद्या, विषरूप जल।

५ प्र। संज्ञामें कोई ऐसा योग है, कि जिससे उसकी संख्या समझी जाय?

उ। हां, वे हैं; गण, लोग, जाति, इत्यादि; जैसा, मनुष्य गण, पण्डित लोग, पशु जाति, राज दल, एक ठौर, पांच भात, नदी सब, वानर समूह।

५ पाठ।

गुणवाचकके विषें।

१ प्र। गुणवाचक किसको कहते हैं?

उ। जिन् सब बातोंसे गुण कहा जाय, उन्हींको गुणवाचक कहते हैं; जैसा कि ज्ञानी, दयावान्, दयालु।

२ प्र। गुणवाचक शब्दकी संख्या और कारक हैं क्या नहीं?

उ। नहीं, उसमें विशेष संख्या अथवा कारक नहीं हैं; परन्तु सो संज्ञाभर समझनेसे, उसमें संख्या और कारककी योजना किई जाती है; जैसा दुःखी, दुखियों वा -हीन् को, का, के, की इत्यादि।

३ प्र। गुणवाचक शब्दका लिङ्ग कैसें निर्णय किया जाता है?

उ। नपुंसक लिङ्गके विषें गुणवाचक शब्दसे जो प्रत्यय है, मत् और वत् उसको पुल्लिङ्गमें मान् और वान् होता है; जैसा कि, श्रीमत् श्रीमान्, रूपवत् रूपवान्। परन्तु स्त्रीलिङ्गमें मती और वती होता है; जैसा, श्रीमत् श्रीमती, रूपवत् * रूपवती।

* बुद्धिमत्, धनुमत्, भानुमत्, भाग्यवत्, धनवत्, ज्ञानवत्, इत्यादि शब्दोंके कारक श्रीमत् वा रूपवत् शब्दके कारककी न्याईं अभ्यास करो।

और सब शब्दोंका पहिले लिङ्गकी नाईं जानना; जैसा. सुन्दर सुन्दरी, भला भली * ।

४ प्र। गुणवाचकमें और विशेष किस् प्रकारसे किया जाता है?

उ। और विशेष तर वा तम इन् दो प्रत्ययोंसे किया जाता है; जैसा कि, शिष्ट शिष्टतर शिष्टतम, अर्थात् शिष्ट, शिष्टसे अधिक शिष्ट, अति अथवा अत्यन्त शिष्ट § ।

---

* दृढ, कृपालु, काला, गोरा, पीला, इत्यादि शब्दोंको सुन्दर वा भला शब्दकी समान अभ्यास करो।

§ मन्द, [illegible], सुशील, शान्त, दुःशील, दुष्ट, भद्र, कठोर, कोमल, नम्र, इत्यादि सब शब्दोंको शिष्ट शब्दकी समान अभ्यास करो।

तृतीय खण्ड।

सर्वनामके विषयमें।

१ पाठ।

१ प्र। सर्वनाम किसको कहते हैं?

उ। मैं, तू, वह, इत्यादिके समान शब्दोंको सर्वनाम कहते हैं।

२ प्र। वह सर्वनाम किस प्रकारसे समझा जाता है?

उ। सो केवल संज्ञाकी बदली होके देखनेमें आवता है, जैसा ईश्वर पुण्यवान्को भला जानता है, परन्तु वह पापियोंपर घिना कर्ता है।

३ प्र। सर्वनाम के भांतिका है?

उ। नामवाचक, सम्बन्धवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, अधिकार और गौरव सहित, और प्रश्नवाचक, इन् भेदोंसे सर्वनाम छः प्रकारका है।

४। नामवाचक सर्वनामके कारक किस प्रकारसे रचे जाते हैं?

उ। वे संज्ञाकी न्याईं इस प्रकारसे रचे जाते हैं।

पुंलिङ्ग स्त्रीलिङ्ग नपुंसकलिङ्ग इन् तीनों लिङ्गमें।

एक वचन।		बहु वचन।	
कर्त्ता,	मैं	कर्त्ता,	हम्
कर्म,	मुझको वा मुझे	कर्म,	हमको वा हमों को वा हमें
करण,	मुझ करके	करण,	हम करके वा हमों करके
सम्प्रदान,	मेरे लिये वा मुझको	सम्प्रदान,	हमारे लिये वा हमको वा हमें

अपादान,	मुझसे	अपादान,	हमसे
सम्बन्ध,	मेरा, -रे, -री	सम्बन्ध,	हमारा, -रे,-री
अधिकरण,	मुझमें वा मेरे विषय	अधिकरण,	हममें वा हमारे विषय

परन्तु बहु वचनका अर्थ निश्चय करनेके लिये हम् शब्दके आगे सब शब्दका योग होता है इस् प्रकारसे।

कर्त्ता,	हम सब
कर्म,	हम सबको वा -सभोंको
करण,	हम सब करके वा -सभों करके
सम्प्रदान,	हम सबके लिये वा -सभोंके लिये वा हम सबको वा -सभोंको
अपादान,	हम सबसे वा -सभोंसे
सम्बन्ध,	हम् सबका, -के, -की वा-सभोंका, -के, -की
अधिकरण,	हम सबमें वा -सभोंमें वा हम सबके विषय वा -सभोंके विषय

एक वचन।		बहु वचन।	
कर्त्ता,	तू	कर्त्ता,	तुम्
कर्म,	तुझको वा तुझे	कर्म,	तुमको वा तुम्हें
करण,	तुझ करके	करण,	तुम् करके वा तुम्हें करके
सम्प्रदान	तेरे लिये वा तुझको	सम्प्रदान,	तुम्हारे लिये, तुम् वा तुम्हेंको
अपादान,	तुझसे	अपादान,	तुम् वा तुम्हेंसे
सम्बन्ध,	तेरा,-रे,-री	सम्बन्ध,	तुम्हारा, रे,-री
अधिकरण,	तुझमें वा तेरे विषय	अधिकरण,	तुम्‌वा-तुम्हेंमें वा तुम्हारे विषय
सम्बोधन,	हे तू	सम्बोधन,	हे तुम्

परन्तु बहुवचनका अर्थ निश्चय करनेके लिये हम् सब शब्दकी समान तुम् सब शब्दकोभी जानना।

	एक वचन।		बहु वचन।
कर्त्ता,	वह्	कर्त्ता,	वे
कर्म,	उस्को वा उसे	कर्म,	उन्को वा उन्हें, वा उन्हों-को वा उन्हें
करण,	उस्करके	करण,	उन् वा उन्हों-करके
सम्प्रदान,	उस्के लिये वा उस्को	सम्प्रदान,	उन्के लिये, वा उन् वा उन्होंको
अपादान,	उस्से	अपादान,	उन् वा उन्होंसे
सम्बन्ध,	उस्का, -के, -की	सम्बन्ध,	उन् वा उन्हों-का, के, की
अधिकरण,	उस्में वा उस्के विषय	अधिकरण,	उन् वा उन्होंमें, वा उन् वा उन्होंके विषय

परन्तु बहुवचनका अर्थ निश्चय करनेके लिये वे शब्दके आगे सब शब्दका योग होता है, इस् प्रकारसे।

कर्त्ता,	वे सब
कर्म,	उन् सब वा उन् सभोंको इत्यादि सब कारकके विषय जानना।

---

२ पाठ।

सम्बन्धवाचक सर्वनामके विषय।

१ प्र। सम्बन्धवाचक सर्वनाम किस्को कहते हैं?

उ। जो और सो ये शब्द सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहावते हैं, क्योंकि ये किसी संज्ञा, अथवा सर्वनामके पलटे कहे जाते हैं;

जैसा, जो वचन ईश्वरने कहा है, सो सत्य। जो सबका पालन कर्त्ता है सो ईश्वर।

२ प्र। सम्बन्धवाचक सर्वनामका कारक किस् प्रकारसे होता है?

उ। इस् प्रकारसे।

स्त्रीपुम्नपुंसक लिङ्गमें।

एक वचन।		बहु वचन।	
कर्त्ता,	जो	कर्त्ता,	जोसब
कर्म,	जिस्को, वा जिसे	कर्म,	जिन् वा जिन्होंको, वा जिन्हें
करण,	जिस् करके	करण,	जिन् वा जिन्हों करके
सम्प्रदान,	जिस्के लिये, वा जिस्को	सम्प्रदान,	जिन्के वा जिन्होंके लिये, जिन् वा जिन्होंको
अपादान,	जिस्से	अपादान,	जिन् वा जिन्होंसे
सम्बन्ध,	जिस्का, -के, -की	सम्बन्ध,	जिन् वा जिन्होंका, के, की
अधिकरण,	जिस्में, वा जिस्के विषय	अधिकरण,	जिन् वा जिन्होंमें, वा जिन्के वा जिन्होंके विषय

एक वचन।		बहु वचन।	
कर्त्ता,	सो	कर्त्ता,	सो सब
कर्म,	तिस्को वा तिसे	कर्म,	तिन् वा तिन्हों-को, वा तिन्हें
करण,	तिस कर्के	करण,	तिन् वा तिन्हों-कर्के
सम्प्रदान,	तिस्के लिये, वा तिस्को	सम्प्रदान,	तिन् वा तिन्हों के लिये, वा तिन् वा तिन्हों-को
अपादान,	तिस्से	अपादान,	तिन् वा तिन्होंसे
सम्बन्ध,	तिस्का,-के,-की	सम्बन्ध,	तिन् वा तिन्हों-का,-के,-की
अधिकरण,	तिस्में, वा तिस्के विषय	अधिकरण,	तिन् वा तिन्हों-में, वा तिन्के वा तिन्होंके-विषय

३ प्रश्न। निश्चयवाचक सर्व्वनाम और अनिश्चयवाचक सर्व्वनाम किन्को कहते हैं?

उत्तर। यह शब्द निश्चयवाचक, और कोई, कुछ ये शब्द अनिश्चयवाचक सर्व्वनाम कहावते हैं। और इस् प्रकारसे इन्के कारककी घटना होती है।

	एक वचन।		बहु वचन।
कर्त्ता,	यह	कर्त्ता,	ये
कर्म,	इसको वा इसे	कर्म,	इन् वा इन्हों-को, वा इन्हें
करण,	इस् कर्के	करण,	इन् वा इन्हों-कर्के
सम्प्रदान,	इसके लिये, वा इसको	सम्प्रदान,	इनके वा इन्हों-के लिये, वा इन-वा इन्हों को
अपादान,	इससे	अपादान,	इन् वा इन्हों से
सम्बन्ध,	इसका,-के,-की	सम्बन्ध,	इन् वा इन्हों-का के, की
अधिकरण,	इसमें, वा इस-के विषय	अधिकरण,	इन् वा इन्हों में, वा इन् वा इन्हों के विषय

	एक वचन।		बहु वचन।
कर्त्ता,	कोई	कर्त्ता,	सब कोई
कर्म,	किसीको	कर्म,	किन् वा किन्हों को
करण,	किसी कर्के	करण,	किन् वा किन्हों कर्के

सम्प्रदान,	किसीके लिये वा किसीको	सम्प्रदान,	किनके वा किन्होंके लिये, वा किन-वा किन्हों-को
अपादान,	किसीसे	अपादान,	किन-वा किन्हों-से
सम्बन्ध,	किसीका,-के-की	सम्बन्ध,	किन-वा किन्हों का,-के,-की
अधिकरण,	किसीमें, वा किसीके विषय	अधिकरण,	किन-वा किन्हों में, वा किनके-वाकिन्होंके-विषय

एक वचन।

कर्त्ता,	कुछ
कर्म,	किसूको
करण,	किसकर्के
सम्प्रदान,	किसूके लिये, वा किसूको
अपादान,	किसूसे
सम्बन्ध,	किसूका,-के-की
अधिकरण,	किसूमें, वा किसूके विषय

परन्तु कुछ शब्द सेबऊ वचन नहीं होता।

३ पाठ।

अधिकार और गौरव सहित, और

प्रश्नवाचकके विषय।

१ प्रश्न। अधिकार और गौरव सहित सर्वनाम किनको कहते है?

उत्तर। आप और अपना इन् दोनोंको अधिकार और गौरव सहित सर्वनाम कहते है। और इस् प्रकारसे कारककी घटना होती है।

	एक वचन।		बहु वचन।
कर्त्ता,	आप	कर्त्ता;	आप लोग
कर्म,	आपको, आपनेको	कर्म,	आपलोगों-वा -लोगन्-को, अपने लोगों-वा -लोगन् को
करण,	आपकर्के, अपने कर्के	करण,	आप लोगों वा -लोगन्-कर्के, अपने लोगों-वा -लोगन् कर्के
सम्प्रदान,	आपके लिये वा आपको. अपने लिये वा अपनेको	सम्प्रदान,	आपलोगों-वा -लोगन् के लिये, अपन लोगों वा-लोगन् को
अपादान,	आपसे. वा अपनेसे	अपादान,	आपलोगों वा लोगन् से, अपने लोगों वा लोगन् से
सम्बन्ध,	आपका,-के, -की, वा अपना, ने, नी	सम्बन्ध,	आपलोगों वा लोगन-का, -के, की अपने लोगों-वा लोगन् का, के, की

अधिकरण,	आपमें, वा आपके विषय, अपनेमें, वा अपनेके विषय	अधिकरण,	आपलोगों-वा लोगन्-में आपलोगों-वा-लोगन्-के विषय, अपने लोगों-वा लोगन्-में वा अपने लोगों-वा लोगन्-के विषय

२ प्रश्न। प्रश्नवाचक सर्वनाम किन्को कहते है?

उत्तर। क्या, और कौन, इन् दोनोंको प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसा, यह क्या है? कौन मनुष्य आता है।

३ प्रश्न। इन्के कारकोंकी घटना किस् प्रकार से होती है?

उत्तर। इस् प्रकारसे।

तीनों लिङ्गोंमें।

एक वचन।		बहु वचन।	
कर्त्ता,	कौन	कर्त्ता,	कौन
कर्म,	किस्को, वा किसे	कर्म,	किन्को, किन्हों को वा किन्हें
करण,	किसकर्के	करण,	किन्-वा किन्हों कर्के
सम्प्रदान,	किस्के लिये, वा किस्को	सम्प्रदान,	किन्-वा किन्हें के लिये, किन् वा-किन्होंको
अपादान,	किस्से	अपादान,	किन्-वा-किन्हों से

सम्बन्ध,	किस्‌का,-के,-की	सम्बन्ध,	किन्‌का वा किन्होंका,-के,-की
अधिकरण,	किस्‌में, किस्‌के विषय	अधिकरण,	किन्‌- वा किन्होंमें, किन्‌के वा किन्होंके विषय

क्या, यह शब्द तीनों लिङ्गोंमें है सही परन्तु अव्यय है।

४ प्रश्न। कोई सर्वनाम आपसमें युक्त होने सकता है क्या नहीं!

उत्तर। हाँ होने सकता है इस्‌प्रकारसे; जैसा, जो जो, जो कोई, जो कुछ इत्यादि; और इनसे कारककी घटना करनेसे दोनो कारकत्वको पावते हैं; जैसा, जिस्‌ जिस्‌को जिस्‌ किसीका, जिस्‌ किस्‌ करके इत्यादि।

धातु खण्ड।

१ पाठ।

क्रियाके विषयमें।

१ प्रश्न। क्रिया किस प्रकारसे जानी जाती है?

उत्तर। जो बात संज्ञा अथवा सर्वनामके उत्तरवर्ती होके यथार्थ हालको जनावे, वही क्रिया कहावती है; जैसा बालक सीखे, गुरु पढ़ावे।

२ प्रश्न। क्रिया के प्रकारकी है?

उत्तर। क्रिया चार प्रकारकी है, अकर्मक, कर्तृवाच्य, प्रेरणार्थ, और कर्मणिवाच्य।

३ प्रश्न। कौनसी क्रिया अकर्मक कही जाती है?

उत्तर। जिन सब क्रियानमें कर्त्ताका भाव वा रीति वा गुण प्रकाशित होवे वही अकर्मक क्रिया कही जाती है; जैसा, होना, जाना, बैठना।

४ प्रश्न। कर्तृवाच्य क्रिया किस प्रकारसे जानी जाती है?

उत्तर। जो क्रिया अपने पिछले कर्म कारकको रखे वही कर्तृवाच्य क्रिया कही जाती है; जैसा, ईश्वर साधु लोगोंको प्यार करता है, परन्तु वह पापियोंको दण्ड देता है।

५ प्र। कौनसी क्रिया प्रेरणार्थ कही जाती है?

उ। कर्त्ता अन्यको जो क्रिया प्रेरणा करता है वही प्रेरणार्थ कही जाती है; जैसा, तुम सब काम कराओ।

६ प्र। कौनसी क्रिया कर्मणिवाच्य कही जाती है?

उ। जो क्रिया कर्म पावनेको बतलाती है वही कर्मणिवाच्य कही जाती है; जैसा, काम किया जाता है।

७ प्र। क्रियाके नियम कितने हैं?

उ। क्रियाके नियम पाँच है; स्वार्थ नियम अनुमत्यर्थ नियम, प्रश्नार्थ नियम, आग्रंसार्थ नियम, और भावमात्र वाचक नियम।

८ प्र। क्रिया पदके प्रत्ययमें एक वचन और बहुवचनका विशेष है क्या नहीं?

उ। हाँ, है; जैसा कि, मैं कर्त्ता हूं, हम कर्त्ते हैं।

९ प्र। स्वार्थ नियममें का समझावता है?

उ। उसमें उक्ति अथवा प्रश्न समझा जाता है; जैसा, मैं प्रेम कर्त्ता हूं तुम् क्या प्रेम नहीं कर्त्ते हो।

१० प्र। क्रियाका काल अथवा नियम किस् प्रकारसे कहा जाता है?

उ। सो इस् प्रकारसे कहा जाता है।

---

२ पाठ।

अकर्मक क्रियाहोना।

स्वार्थ नियम।

वर्त्तमान काल।

एक वचन।		बहु वचन।	
मै	हूं	हम्	हैं
तू	है	तुम्	हो
वह्	है	वे	हैं

अपूर्ण भूत काल।

एक वचन।		बहु वचन।	
मैं	था	हम्	थे
तू	था	तुम्	थे
वह्	था	वे	थे

अद्यतन भूत काल।

एक वचन।		बहु वचन।	
मैं	हुवा हूं	हम्	हुए हैं
तू	हुवा है	तुम्	हुवे हो
वह्	हुवा है	वे	हुए हैं

अनद्यतन भूत काल।

एक वचन।		बहु वचन।	
मैं	हुवाथा	हम्	हुएथे
तू	हुवाथा	तुम्	हुवथे
वह्	हुआथा	वे	हुएथे

भविष्यत् काल।

एक वचन।		बहु वचन।	
मै	हूंगा, वा होऊंगा	हम्	होंगे, वा होएंगे
तू	होगा, वा होएगा	तुम्	होगे, वा होवोगे
वह्	होगा, वा होएगा	वे	होंगे, वा होवेंगे

भविष्यत् भूत काल।

एक वचन।		बहु वचन।	
मैं	हो चुकूंगा	हम्	हो चुकेंगे
तू	हो चुकेगा	तुम्	हो चुकोगे
वह्	हो चुकेगा	वे	हो चुकेंगे

अनुमत्यर्थ नियम।

१ प्र। अनुमत्यर्थ नियमसे क्या समझा जाता है?

उ। उस्से केवल आज्ञा और विन्ती समझी जाती है; जैसा कि, ईश्वरकी आज्ञाओंका पालन करो; हे प्रिय बन्धु लोगो, तुम् बुरे व्यवहारोंको त्याग करो।

२ प्र। अनुमत्यर्थ नियमकी उक्ति किस प्रकारसे किई जाती है?

उ। सो इस प्रकारसे।

	एक वचन।		बहु वचन।
मैं	होऊं	हम्	होवें
तू	हो, वा आप हूजियो	तुम्	होवो, वा आपलोक हूजिये
वह्	होवे	वे	होवें

शक्त्यर्थ नियम।

१ प्र। शक्त्यर्थ नियमसे क्या समझा जाता है?

उ। उससे साध्यता वा शक्ति समझी जाती है; जैसा हम् सब वहां आज पढ़ने सकें; ऐसा नहीं होनेसे आज हम् नहीं पढ़ने सकते।

२ प्र। शक्त्यर्थ नियमकी उक्ति किस प्रकारसे किई जाती है?

उ। सो इस् प्रकारसे।

वर्त्तमान काल।

	एक वचन।		बहु वचन।
मैं	होऊं, वा होसकूं	हम्	होवें, वा होसकें
तू	होवे, वा होसके	तुम्	होवो वा होसको
वह्	होवे, वा होसके	वे	होवें वा होसकें

अपूर्ण भूत काल।

	एक वचन।		बहु वचन।
मैं	होसक्ता	हम्	हो सक्ते
तू	हो सक्ता	तुम्	हो सक्ते
वह्	हो सक्ता	वे	हो सक्ते

अद्यतन भूत काल।

एक वचन।		बहु वचन।	
मैं	हो सका हूं	हम्	हो सके हैं
तू	हो सका है	तुम्	हो सके हो
वह्	हो सका है	वे	हो सके हैं

अनद्यतन भूत काल।

एक वचन।		बहु वचन।	
मैं	हो सका था	हम्	हो सके थे
तू	हो सका था	तुम्	हो सके थे
वह्	हो सका था	वे	हो सके थे

भविष्यत् काल।

एक वचन।		बहु वचन।	
मैं	हो सकूंगा	हम्	हो सकेंगे
तू	हो सकेगा	तुम्	हो सकोगे
वह्	हो सकेगा	वे	हो सकेंगे

आशंसार्थ नियम।

१ प्र। आशंसार्थ नियमसे क्या समझा जाता है?

उ। उससे अनुमानाभिलाषयम इत्यादि अन्तर्गत समझा जाता है; जैसा, जो ऐसा होय कि तुम् सत् उपदेशको ग्रहण करो, तो सब मनुष्य तुमको भला जानेंगे।

२ प्र। आशंसार्थ नियमका काल किस् प्रकारसे जाना जाता है?

उ। सो इस् प्रकारसे है।

वर्त्तमान काल।

एक वचन।		बहु वचन।	
जो	मैं होऊं	जो	हम् होवें, वा होय
जो	तू होय	जो	तुम् होओ
जो	वह् होय	जो	वे होवें, वा होय

अपूर्ण भूत काल।

एक वचन।		बहु वचन।	
जो	मैं होता	जो	हम् होते
जो	तू होता	जो	तुम् होते
जो	वह् होता	जो,	वे होते

भावमात्र वाचक नियम।

१ प्र। भावमात्र वाचकसे क्या समझा जाता है?

उ। उससे एक वचन वा बहु वचन और कर्त्ताका गुण इनको छोड़के, केवल धातुका अर्थ समझा जाता है।

भावमात्र वाचक नियम, होना।

असमापिका क्रिया।

१ प्र। असमापिका क्रिया किसको कहते है?

उ। जो क्रिया समापिका क्रियाकी चाहना करै, उसीको असमापिका क्रिया कहते हैं; और वह् इसी प्रकारसे कही जाती है।

क्रिया विशेषण, होके, होकर, होकर्के, होकरकर।

वर्त्तमान, होता वा हुवा, एक वचन, और होते वा हुते औ बहु वचन *।

---

* नित्य असमापिका इस् प्रकारसे बनाई जाती है, होता२ होते२ इत्यादि।

भूत, ऊवा, एक वचन ; और ऊए, बहुवचन।
सांघिक क्रिया, कर्त्ता, होना।
कर्म, होनेको इत्यादि सब कारक आवेंगे।

---

३ पाठ।

जाना क्रिया।

साधे नियम।

वर्त्तमान काल।

एक वचन।		बहु वचन।	
मैं	जाता हूं	हम	जाते हैं
तू	जाता है	तुम	जाते हो
वह	जाता है	वे	जाते हैं

अपूर्ण भूत काल।

एक वचन।		बहु वचन।	
मैं	जाता था	हम	जाते थे
तू	जाता था	तुम	जाते थे
वह	जाता था	वे	जाते थे

अद्यतन भूत काल।

एक वचन।		बहु वचन।	
मैं	गया हूं	हम	गये हैं
तू	गया है	तुम	गये हो
वह	गया है	वे	गये हैं

अनद्यतन भूत काल।

एक वचन।		बहु वचन।	
मैं	आया था	हम्	आये थे
तू	आया था	तुम्	आये थे
वह्	आया था	वे	आये थे

भविष्यत् काल।

एक वचन।		बहु वचन।	
मैं	आऊंगा	हम्	आयेंगे
तू	आयेगा	तुम्	आओगे
वह्	आयेगा	वे	आयेंगे

भविष्यत् भूत काल।

एक वचन।		बहु वचन।	
मैं	आ चुकूंगा	हम्	आ चुकेंगे
तू	आ चुकेगा	तुम	आ चुकोगे
वह्	आ चुकेगा	वे	आ चुकेंगे

अनुमत्यर्थ नियम।

एक वचन।		बहु वचन।	
मैं	आऊं	हम्	आवें
तू	आ, वा आये आइयो	तुम्	आओ, वा आये वा आइये
वह्	आवे	वे	आवें

सामर्थ्य नियम।

वर्त्तमान काल।

एक वचन।		बहु वचन।	
मैं	जाऊं, वा जासकूं	हम्	जांय, वा जासकें
तू	जाय, वा जासके	तुम	जाओ, वा जासको
वह्	जाय, वा जासके	वे	जांय, वा जासकें

अपूर्ण भूत काल।

एक वचन।		बहु वचन।	
मैं	जा सक्ता	हम्	जा सक्ते
तू	जा सक्ता	तुम्	जा सक्ते
वह्	जा सक्ता	वे	जा सक्ते

अद्यतन भूत काल।

एक वचन।		बहु वचन।	
मै	जा सका हूं	हम्	जा सके हैं
तू	जा सका है	तुम्	जा सके हो
वह्	जा सका है	वे	जा सके हैं

अनद्यतन भूत काल।

एक वचन।		बहु वचन।	
मैं	जा सकाथा	हम्	जा सकेथे
तू	जा सकाथा	तुम्	जा सकेथे
वह्	जा सकाथा	वे	जा सकेथे

भविष्यत् काल।

एक वचन।		बहु वचन।	
मैं	जा सकूंगा	हम	जा सकेंगे
तू	जा सकेगा	तुम	जा सकोगे
वह	जा सकेगा	वे	जा सकेंगे

आशंसार्थ नियम।

वर्त्तमान काल।

एक वचन।			बहु वचन।		
जो	मैं	जाऊं	जो	हम	जावें, वा जांय
जो	तू	जाऊं	जो	तुम	जावो
जो	वह	जाय	जो	वे	जावें, वा जांय

अपूर्ण भूत काल।

एक वचन।			बहु वचन।		
जो	मैं	जाता	जो	हम	जाते
जो	तू	जाता	जो	तुम	जाते
जो	वह	जाता	जो	वे	जाते

भवभाव वाचक नियम, जाना।

असमापिका क्रिया।

क्रिया विशेषण, जाके, जाकर, जाकके, जाककर।

वर्त्तमान; जाता, वा जाता ऊआ, एक वचन; और जाते, वा जाते ऊवे, बऊ वचन।

भूत; गया, एक वचन; और गये, बऊ वचन।

सांज्ञिक क्रिया, कर्त्ता, जाना। कर्म, जानेको इत्यादि सब कारक जानने।

४ पाठ।

कर्त्तृवाच्य क्रिया।

०००००००००

कर्त्ता क्रिया।

स्वार्थ नियम।

वर्त्तमान काल।

एक वचन।	बहु वचन।
मैं कर्त्ता हूं	हम कर्त्ते हैं
तू कर्त्ता है	तुम कर्त्ते हो
वह कर्त्ता है	वे कर्त्ते हैं

अपूर्ण भूत काल।

एक वचन।	बहु वचन।
मैं कर्त्ता था	हम कर्त्ते थे
तू कर्त्ता था	तुम कर्त्ते थे
वह कर्त्ता था	वे कर्त्ते थे

अद्यतन भूत काल।

एक वचन।	बहु वचन।
मैंने * किया है	हमने किये हैं
तूने किया है	तुमने किये हैं
उसने किया है	उन्होंने किये हैं

---

* कर्त्तृवाच्य क्रियाके अद्यतन या अनद्यतन भूत कालमें कर्त्ताके आगे ने प्रत्यय आवता, और जो वह पहिला या दूसरा नाम वाचक न होय, तो पहिले कारक कर्त्तें ने प्रत्ययको लगाव; जैसा उसने।

अनद्यतन भूत काल।

एक वचन।	बहु वचन।
मैंने किया था	हमने किये थे
तूने किया था	तुमने किये थे
उसने किया था	उन्होंने किये थे

भविष्यत् काल।

एक वचन।	बहु वचन।
मैं करूंगा	हम करेंगे
तू करेगा	तुम करोगे
वह करेगा	वे करेंगे

भविष्यत् भूत काल।

एक वचन।	बहु वचन।
मैं करचुकूंगा	हम करचुकेंगे
तू करचुकेगा	तुम करचुकोगे
वह करचुकेगा	वे करचुकेंगे

अनुमत्यर्थ नियम।

एक वचन।	बहु वचन।
मैं करूं	हम करें
तू कर, वा आप कीजियो	तुम करो, वा आपलोग कीजीये
वह करे	वे करैं

शक्तार्थ नियम।

वर्त्तमान काल।

एक वचन।		बहु वचन।	
मैं	करूं, वा करसकूं	हम	करैं, वा करसकैं
तू	करे, वा करसके	तुम	करो, वा करसको
वह	करे, वा करसके	वे	करैं, वा करसकैं

अपूर्ण भूत काल।

एक वचन।		बहु वचन।	
मैं	कर सक्ता	हम	कर सक्ते
तू	कर सक्ता	तुम	कर सक्ते
वह	कर सक्ता	वे	कर सक्ते

अद्यतन भूत काल।

एक वचन।		बहु वचन।	
मैं	कर सका हूं	हम	कर सके हैं
तू	कर सका है	तुम	कर सके हो
वह	कर सका है	वे	कर सके हैं

अनद्यतन भूत काल।

एक वचन।		बहु वचन।	
मैं	कर सकाथा	हम	कर सकेथे
तू	कर सकाथा	तुम	कर सकेथे
वह	कर सकाथा	वे	कर सकेथे

भविष्यत् काल।

एक वचन।		बहु वचन।	
मैं	कर सकूंगा	हम	कर सकेंगे
तू	कर सकेगा	तुम	कर सकोगे
वह	कर सकेगा	वे	कर सकेंगे

प्रार्थनार्थ नियम।

वर्त्तमान काल।

एक वचन।	बहु वचन।
जो मैं करूं	जो हम् करें
जो तू करे	जो तुम् करो
जो वह् करे	जो वे करें

अपूर्ण भूत काल।

एक वचन।	बहु वचन।
जो मैं कर्त्ता	जो हम् कर्त्ते
जो तू कर्त्ता	जो तुम् कर्त्ते
जो वह् कर्त्ता	जो वे कर्त्तें

भावमात्र वाचक नियम, कर्ना।

असमापिका क्रिया।

क्रियाविशेषण, करके, कर्कर, कर्करके, कर्करकर।

वर्त्तमान; कर्त्ता, वा कर्त्ता हुआ, एक वचन; कर्त्ते, वा कर्त्ते हुए बहु वचन।

भूत; किया, एक वचन; और किये, गये, बहु वचन।

सांज्ञिक क्रिया, कर्त्ता, कर्ना; कर्म कर्नेको इत्यादि सब कारक जानने।

५ पाठ।

प्रेरणार्थ क्रिया।

१ प्रश्न। प्रेरणार्थ क्रिया किस प्रकारसे बनाई जाती है?

उत्तर। सो स्वार्थसे कै एक प्रकार करके बनाई जाती है; जैसा जलाना, और जलवना, जलनेसे; डुबाना, और डुबवाना,

डुबनेसे; दिखाना, और दिखवाना, देनेसे; धुलाना, और धुल-वाना धोनेसे; और करवाना कर्नेसे इत्यादि।

कराना।

सार्थ नियम।

वर्त्तमान काल।

एक वचन।		बहु वचन।	
मैं	कराता हूं	हम्	कराते हैं
तू	कराता है	तुम्	कराते हौ
वह्	कराता है	वे	कराते हैं

अपूर्ण भूत काल।

एक वचन।		बहु वचन।	
मैं	कराताथा	हम्	कराते थे
तू	कराताथा	तुम्	कराते थे
वह्	कराताथा	वे	कराते थे

अद्यतन भूत काल।

एक वचन।		बहु वचन।	
मैंने	कराया है	हम्ने	कराये हैं
तूने	कराया है	तुम्ने	कराये हैं
उस्ने	कराया है	उन्होंने	कराये हैं

अनद्यतन भूत काल।

एक वचन।		बहु वचन।	
मैंने	करायाथा	हम्ने	कराये थे
तूने	करायाथा	तुम्ने	कराये थे
उस्ने	करायाथा	उन्होंने	कराये थे

भविष्यत् काल।

एक वचन।	बहु वचन।
मैं कराऊंगा	हम् करावेंगे
तू करावेगा	तुम् करावोगे
वह् करावेगा	वे करावेंगे

भविष्यत् भूत काल।

एक वचन।	बहु वचन।
मैं करा चुकूंगा	हम् करा चुकेंगे
तू करा चुकेगा	तुम् करा चुकोगे
वह् करा चुकेगा	वे करा चुकेंगे

अनुमत्यर्थ नियम।

एक वचन।	बहु वचन।
मैं कराऊं	हम् करावें
तू करा, वा आप कराइयो	तुम् करावो, वा आपलोग कराइये
वह् करावे	वे करावें

शक्त्यर्थ नियम।

वर्त्तमान काल।

एक वचन।	बहु वचन।
मैं कराऊं, वा करा सकूं	हम् करावें वा करासकें
तू करावे, वा करा सके	तुम् करावो वा करासको
वह् करावे, वा करासके	वे करावें वा करासकें

अपूर्ण भूत काल।

एक वचन।		बहु वचन।	
मैं	करा सकता	हम्	करा सकते
तू	करा सकता	तुम्	करा सकते
वह्	करा सकता	वे	करा सकते

अद्यतन भूत काल।

एक वचन।		बहु वचन।	
मैं	करा सका हूं	हम्	करा सके हैं
तू	करा सका है	तुम्	करा सके हो
वह्	करा सका है	वे	करा सके हैं

अनद्यतन भूत काल।

एक वचन।		बहु वचन।	
मैं	करा सका था	हम्	करा सके थे
तू	करा सका था	तुम्	करा सके थे
वह्	करा सका था	वे	करा सके थे

भविष्यत् काल।

एक वचन।		बहु वचन।	
मैं	करा सकूंगा	हम्	करा सकेंगे
तू	करा सकेगा	तुम्	करा सकोगे
वह्	करा सकेगा	वे	करा सकेंगे

आशंसार्थ नियम।

वर्त्तमान काल।

एक वचन।		बहु वचन।	
जो	मैं कराऊं	जो	हम् करावें
जो	तू करावे	जो	तुम करावो
जो	वह् करावे	जो	वे करावें

अपूर्ण भूत काल।

एक वचन।	बज्ज वचन।
जो मैं कराता	जो हम कराते
जो तू कराता	जो तुम कराते
जो वह कराता	जो वे कराते

भावमात्र वाचक नियम; कराना।

असमापिका क्रिया।

क्रियाविशेषण, कराके, कराकर, कराकर्के, कराकरकर।

वर्त्तमान; कराता, वा कराता ज्ञआ, एक वचन। कराते, वा कराते ज्ञए, बज्ज वचन।

भूत; कराया, एक वचन। और कराये, बज्ज वचन।

सांज्ञिक क्रिया, कर्त्ता कराना; कर्म, करानेको, इत्यादि सब कारक जानने।

---

६ पाठ।

कर्मणि वाच्य क्रिया।

१ प्रश्न। कर्मणि वाच्य क्रिया किस प्रकारसे कही जाती है?

उत्तर। सो इस प्रकारसे, किया जाना।

कार्य्य नियम।

वर्त्तमान काल।

एक वचन।	बज्ज वचन।
मैं किया जाता हूं	हम किये जाते हैं
तू किया जाता है	तुम किये जाते हो
वह किया जाता है	वे किये जाते हैं

अपूर्ण भूत काल।

एक वचन।		बऊ वचन।	
मैं	किया जाताथा	हम्	कियेजातेथे
तू	किया जाताथा	तुम्	किये जातेथे
वह्	किया जाताथा	वे	किये जातेथे

अद्यतन भूत काल।

एक वचन।		बऊ वचन।	
मैं	किया गयाहू	हम्	किये गये हैं
तू	किया गया है	तुम	किये गये हो
वह्	किया गया है	वे	किये गये हैं

अनद्यतन भूत काल।

एक वचन।		बऊ वचन।	
मैं	किया गयाथा	हम्	किये गयेथे
तू	किया गयाथा	तुम	किये गयेथे
वह्	किया गयाथा	वे	किये गयेथे

भविष्यत काल।

एक वचन।		बऊ वचन।	
मैं	किया जाऊंगा	हम्	किये जायगे
तू	किया जायगा	तुम्	किये जावेगे
वह्	किया जायगा	वे	किये जायगे

भविष्यत भूत काल।

एक वचन।		बऊ वचन।	
मैं	किया जा चुकूंगा	हम्	किये जा चुकेंगे
तू	किया जा चुकेगा	तुम्	किये जा चुकोगे
वह्	किया जा चुकेगा	वे	किये जा चुकेंगे

अनुमत्यर्थ नियम।

एक वचन।	बहु वचन।
मैं किया जाऊं	हम किये जांय
तू किया जा, वा आप किये जाइयो	तुम किये जाओ, वा आप-लोग किये जाइये
वह किया जाय	वे किये जांय

शक्त्यर्थ नियम।

वर्तमान काल।

एक वचन।	बहु वचन।
मैं किया जाऊं, वा किया जासकूं	हम किये जांय, वा किये जासकें
तू किया जा, वा किया जासके	तुम किये जाओ, वा किये जासको
वह किया जाय, वा किया जासके	वे किये जांय, वा किये जा सके

सम्पूर्ण भूत काल।

एक वचन।	बहु वचन।
मैं किया जा सक्ता	हम किये जासक्ते
तू किया जा सक्ता	तुम किये जा सक्ते
वह किया जा सक्ता	वे किये जा सक्ते

अद्यतन भूत काल।

एक वचन।	बहु वचन।
मैं किया जा सका हूं	हम किये जासके हैं
तू किया जा सका है	तुम किये जा सके हो
वह किया जा सका है	वे किये जा सके हैं

अनद्यतन भूत काल।

एक वचन।	बहु वचन।
मैं किया जा सकाथा	हम् किये जा सकेथे
तू किया जा सकाथा	तुम् किये जा सकेथे
वह् किया जा सकाथा	वे किये जा सकेथे

भविष्यत् काल।

एक वचन।	बहु वचन।
मैं किया जा सकूंगा	हम् किये जा सकेंगे
तू किया जा सकेगा	तुम् किये जा सकोगे
वह् किया जा सकेगा	वे किये जा सकेंगे

आशंसार्थ नियम।

वर्त्तमान काल।

एक वचन।	बहु वचन।
जो मैं किया जाऊं	जो हम् किये जावें, वा जांय
जो तू किया जाय	जो तुम् किये जाओ
जो वह् किया जाय	जो वे किये जावें, वा जांय

अपूर्ण भूत काल।

एक वचन।	बहु वचन।
जो मैं किया जाता	जो हम् किये जाते
जो तू किया जाता	जो तुम् किये जाते
जो वह् किया जाता	जो वे किये जाते

भावमात्र वाचक नियम, किया जाना।

असमापिका क्रिया।

क्रिया विशेषण, किया जाके, किया जाकर, किया जाकेके, किया जाकरके।

वर्त्तमान; किया जाता, वा किये जाता ऊआ, एक वचन। और किये जाते, वा किये जाते ऊवे, बऊ वचन।

भूत; किया गया, एक वचन। और किये गये, बऊ वचन।

सांज्ञिक क्रिया, कर्त्ता। किया जाना। कर्म, किया जानेको, इत्यादि सब कारक जानने।

७ पाठ।

१ प्रश्न। नकार सहित क्रिया किस् प्रकारसे कही जाती है?

उत्तर। जिस् क्रियाके साथ नहीं, वा न, वा मत, इन्का योग होय, वही नकार सहित क्रिया कहलाती है; परन्तु इन्मेंसे मतका केवल अनुमत्यर्थके साथ योग होता है; जैसा कि, मैं ने नहीं किया; वह् न करे, तू मत कर।

२ प्र। निश्चयका बोधक जो सही इस्का योग किस् प्रकारसे होता है?

उ। सो वह इस् प्रकारसे योग किया जाता है; जैसा मैं सही, हम् सही इत्यादि।

३ प्र। एक क्रियामें दूसरी क्रिया संयुक्त होती है अथवा नहीं?

उ। हाँ बऊत्।

१ आशंसार्थ नियममें क्रिया विशेषण असमापिका क्रियामें होना मिला है; जैसा कि, जो मैंने किया होय, जो तूने किया होय, जो उस्ने किया होय इत्यादि।

२ क्रियाका सम्पूर्ण रूपसे कर्म सिद्ध कर्नेसे जो अनुमान होय, उस् समयमें क्रिया विशेषण असमापिका क्रियामें डालूं, फेकूं, चुकूं इन्का संयोग होय; जैसा, मैं करडालूं, मैं लिख फेकूं, मैं कर चुकूं।

३ जब कर्मके आरम्भका अनुमान होय, तब वर्त्तमान असमापिका क्रियामें लगा यह संयुक्त होय ; जैसा कि, आज मैं विद्या सीखनेको लगा, वे काम करनेको लगे।

४ जब किसी काम करनेमे कर्त्ताकी सामर्थ्य कही कही जाय, तब असमापिका क्रियामें सकूं का योग होय ; जैसा कि मैं करने सकूं, वे करने सकें।

५ जब किसी काममें कर्त्ताकी करनेके लिये इच्छा प्रकाशित होय, तब असमापिका क्रियामें चाहना कभी२ संयुक्त होय ; जैसा कि, मैं सीखने चाहता हूं, वे देखने चाहते हैं।

६ जब कोई काम करनेके लिये कर्त्ताका कोई बस्तु वा भोग रहै, तब असमापिका क्रियामें पावनेका संयोग होय ; जैसा कि, मैं देखने पाऊं, वे देखने पावें।

२ प्रश्न। प्रेरणार्थ क्रियामें संयुक्तक्रिया मिले वा नहीं?

उत्तर। हाँ मिले सहि, परन्तु अति सामान्यसे नहीं।

पांचवां खण्ड।

१ पाठ।

क्रिया विशेषणके विषयमें।

१ प्रश्न। क्रिया विशेषण किसको कहते हैं?

उत्तर। सो एक वाक्य है, क्रिया और गुणवाचक, अथवा और क्रिया विशेषण बातके प्रति है, उसके द्वारा इन्हीं सब वाक्योंके विषय मे एक गुण, वा समय, वा स्थान, और रीति समझी जांय; जैसा कि, बालकने ज्ञान पूर्वक रचना किई है, यह बहुत भला पुत्र होके, सुन्दर लिखता है।

२ प्र। क्रिया विशेषण किस प्रकारसे जाना जाता है?

उ। कैसा! कितना! कब! कहाँ! इस भाँतिसे सब प्रश्नका उत्तर साधारण रीतिसे क्रिया विशेषण होता है; जैसा कि, कैसा है? भला। कितना मोल? बहुत। कब जायगा? तीसरे पहर। कहाँ जाने चाहते हो? इसी ओर।

---

२ पाठ।

पार्श्ववर्त्तिके विषयमें।

१ प्रश्न। पार्श्ववर्त्ती बात कै प्रकारकी है?

उत्तर। उपसर्ग और परवर्त्तीके भेदसे वह दो प्रकारकी है।

२ प्र। उपसर्ग गिन्तीमें कितने होंगे?

उ। सबसुद्धा उपसर्ग गिन्तीमें बीस हैं, जैसा।

प्र	परा	अप	सम्	अनु
अव	निर्	दुर्	वि	आङ्
नि	अधि	अपि	अति	सु
उत्	अभि	प्रति	परि	उप

३ प्र। इन बीस उपसर्गोंका गुण क्या है?

उ। वे सब कभी२ शब्दके अनुवर्त्ती, वा शब्दके उलटे, अथवा शब्दके उद्दीपक होते हैं; जैसा, आशा, प्रत्याशा, निराशा, सुआशा।

४ प्र। किन शब्दोंको परवर्त्ती कहते हैं?

उ। तक	सहित	संग	सह
साथ	ऊपर	नीचे	पास
कारण	निमित्त	लिये	द्वारा
लग	निकट	बीच	मध्य
हेतु	विना	व्यतिरेक	अतीत
कर्त्तृक	करणक	पूर्वक	होके
देके	करके	अवधि	पर्य्यन्त
का	परे	पश्चिम	पश्चात्
आगे	ठिकाने	समीप	पीछे
विपरीत	सन्मुख	और	इत्यादि।

ये सब शब्द परवर्त्ती प्रसिद्ध हैं।

---

३ पाठ।

यौगिक शब्दके विषयमें।

१ प्रश्न। कौनर शब्द यौगिक कहलावते हैं?

उ। एवं	वरं	और	परन्तु
क्योंकि	जिसलिये	क्या	किम्बा
अथवा	तक	वा	अतएव

इसीसे	इसदर्थ	इसकारण	इसविषय
इसीनिमित्त	तभी	तो	जो
तथापि	कदाचित्	नहींतो	दूसरा
तथापि	यदि	तथा	यथा
यद्यपि	अन्तर	अपर	किन्तु

इत्यादि सब शब्द यौगिक कहावते हैं।

२ प्र। इन सबका क्या गुण है?

उ। ये सब वाक्यकी रचनामें संयुक्त होते हैं; जैसा कि, जो तुम और हम विद्याको नहीं सीखें, तो मूर्ख होके रहेंगे।

४ पाठ।

आक्षेपकी उक्तिके विषयमें।

१ प्र। आक्षेपकी उक्तिसे क्या समझावता है?

उ। उक्तिसे वक्ताका मन्न प्रभाव समझावता है; जैसा, आः क्या दुःख है! हाय कैसी ज्वाला है! उः कैसी पीड़ा है!

अहो, ओहो, अरे, अहो, ओ, भो, हे! ये सब शब्द आक्षेपोक्ति दूरवर्त्ती व्यक्तिके पूर्वमें होते हैं; जैसा अहो देवदत्त! अहो रामदत्त! अरे बावर्ची!

हे, हो, होत, रे, ये सब आक्षेपोक्ति वर्त्तमान व्यक्तिके आगेमें होते हैं, जैसा कि, भाई हे! अक्रूरदत्त हो! सालगराम होत! भटियारे।

छठा खण्ड।

१ पाठ।

रचनाकी रीतिके विषयमें।

१ प्र। वाक्यकी रचनामें कर्त्ता, कर्म, क्रिया, इन्‌की किस्‌प्रकारसे घटना होती है?

उ। इस्‌रीतिसे।

१ जो केवल कर्त्ता कर्म क्रियासे वाक्यकी रचना होय, तब कर्त्ता पहिले, कर्म दूसरे, क्रिया तीसरे होय; जैसा, राजा मन्त्रीको आज्ञा देता है।

२ जो बढ़ती बातें होंय, तब सब बातें कर्त्ताके आगेमें कही जांय; जैसा कि, एक दुष्ट लोग राजाके आगे प्रधान मन्त्रीकी बड़ी निन्दा करता है।

३ गुणवाचक शब्द संज्ञाके पहिले रक्खाजाय; जैसा सद्‌गुरु अपनी अटकलसे शिष्यको दण्ड देता है।

४ जो वाक्यकी रचना लम्बी होय, अथवा नाना प्रकारकी बातें एक क्रियाके कर्मकारकका निर्णय करें; तब यही बड़ी बात पहिले कही जाय, पीछे इन्‌ सबके द्वारा निर्णय ऊई जो बात, वह कर्म्म कारकके प्राप्त होनेसे पीछे, क्रियाका कर्त्ता उक्त होय; जैसा, जो बालक पैठके विद्याको सीखे और सदा विद्याके सीखनेमें लगारहै, उस्‌को पण्डित लोग भला जान्‌ते हैं।

सातवां खण्ड।

मिलानेके विषयमें।

१ पाठ।

१ प्रश्न। संज्ञामें गुणवाचकका मेल है क्या नहीं?

उत्तर। हाँ लिङ्गमें है; जैसा, उत्तम पुरुष, अच्छी स्त्री।

२ प्र। क्रिया अपने कर्त्ताके साथ मिले क्या नहीं?

उ। हाँ; जैसा, मैं पाठ करूं, तू लिख, वह मुझे बताय दे।

३ प्र। जो इस सम्बन्ध सर्वनाममें वे और सो आकर्षित होवे समान लिङ्ग संख्या होती है अथवा नहीं?

उ। हाँ होती है; जैसा, जो भिक्षाको देते हैं वेही धनवान् हैं। जो भली वस्तु है सोई महंगी है।

४ प्र। जो कदाचित् सर्वनाम और क्रियाके मध्यमें कर्त्ता नहीं पाया जाय, तो सर्वनाम किस कारकके साथ युक्त होगा?

उ। कर्त्ता कारकके साथ युक्त होगा; जैसा, जो ईश्वर पर विश्वास रखते हैं, वे धन्य हैं।

५ प्र। परन्तु जो कर्त्ता पाया जाय, तो सर्वनाम किस कारकमें युक्त होगा?

उ। पिछली क्रिया वा वाचका शब्द जिस कारकको धरे, तिसीमें सर्वनाम पाया जायगा; जैसा, जो वह ईश्वरकी सेवा करे, तो ईश्वर उसीसे प्रेम करता है; जो बालक मूर्ख होके रहेगा, उसीके ऊपर बड़ी लज्जा पड़ेगी।

२ पाठ।

१ प्र। और, ओ, ये दो यौगिक शब्द समभाव कारक और क्रियापद और कालको चाहैं क्या नहीं?

उ। हाँ जैसा कि, मैंने राजाको और मन्त्रीको देखा, ओ निवेदन किया।

२ प्र। और, ओ, एवं इन तीन यौगिक शब्दोंमें दो तीन संज्ञा मिलनेसे, उनके साथ गुणवाचक और सम्बन्ध सर्वनाम क्रिया मिश्रित होने सके क्या नहीं?

उ। हाँ, सो सही, पाठशालामें जो विद्यामें निपुण थे वे गौरीनाथ, और बद्रू सिंह, एवं वेणीराम; परन्तु एक लिङ्ग विशेष लिङ्ग होनेसे, सभोंसे पुल्लिङ्ग ग्राह्य होय; जैसा कि, रामदास और उसकी स्त्री एवं उसका बेटा और उसकी बेटी सभी सुन्दर हैं।

३ प्र। दो तीन कर्त्ताकी एक क्रिया होनेसे, क्रियाकी तर्कना कैसे किई जाय?

उ। तुम् और वे शब्दसे हम् शब्दकी क्रियाकी तर्कना होय; जैसा कि हम् पाठशालामें जायेंगे, तुम् और वे पण्डित होवेंगे।

४ प्र। संज्ञामें तुल्य वस्तु बुझानेसे, आपसमें मेल होय या नहीं?

उ। हाँ; जैसा कि, गाड़देश कलकत्ता नगरी, ईश्वर पालन कर्त्ता।

आठवां खण्ड।

वाक्य अधिकार।

१ पाठ।

संज्ञा के विषयमें।

१ प्र। एक संज्ञा विशेषका बोधक और संज्ञाके ऊपर आयत है क्या नहीं?

उ। हाँ, यह सम्बन्ध कारकके पदमेंही है; जैसा कि, ईश्वरका प्रेम अनन्त है। विद्याका ज्ञान बहुत महंगा है।

२ प्र। जिस संज्ञामें निमित्त अथवा रीति समझी जाय, सो किस कारक पदको चाहे?

उ। करणकारक को; जैसा, उसने उसको सोंटेसे मारा; परन्तु किसी२ समयमें करण कारक नहीं होनेसे, कर्के, देके कहा है; जैसा कि, मैं गाड़ीकर्के आय हूं। उसने छुरीदेके काठ डाला।

२ पाठ।

क्रियाके विषयमें।

१ प्र। कर्तृवाच्य क्रिया किस कारक पदको चाहे?

उ। कर्म कारकको; जैसा कि, पण्डित जन मूर्खको तुच्छ कहते हैं।

२ प्र। अकर्मिका क्रिया कभी कर्म पदको चाहे वा नहीं?

उ। हाँ चाहे, परन्तु प्रेरणार्थ पदमें है; जैसा मैं उसको पढाऊं, आगने उसको जलाया।

३ प्र। जब वर्तमान असमापिका क्रियाके परे होना क्रिया मिले, तब किस पदको चाहे?

उ। कर्म पदको चाहे, क्योंकि, उसमें आवश्यकता समझी जाय; जैसा कि, मुझको कर्म होय, तुझको कर्म हुआ, उसको कर्म होगा।

४ प्र। जब कर्तृवाच्य क्रिया आनेके साथ कर्मणि वाच्य होय, तब वह कर्म कारकको चाहे क्या नहीं?

उ। हाँ; जैसा कि, दुष्टजन पराये किये उपकारको नहीं मानता है, इसीसे वह पहचाना जाय, परन्तु सत् कर्मसे साधुको पहचाना जाय।

५ प्र। होना क्रियामें अधिकार समझानेसे, किस कारकको चाहे?

उ। सम्बन्ध कारकको; जैसा, हमारा होय, तुम्हारा होय, उनका होय।

६ प्र। कर्मणि वाच्य क्रियाका कर्ता किस कारकके साथ संयुक्त होय?

उ। करण कारक वा अपादानके साथ; जैसा कि, वे आग करके वा आगसे जल गये थे।

७ प्र। क्रिया सिद्ध कर्मके लिये शब्दमें करना क्रिया संयुक्त होनेसे किस कारकको चाहै?

उ। सम्बन्ध अथवा कर्म कारकको; जैसा, जो ईश्वरकी सेवा नहीं करते, उनको वह अनन्त दण्ड देगा।

८ उ। पैठना, रहना, ऐसी जितनी क्रिया हैं, वे किस कारकको चाहती हैं?

उ। अधिकरणको; जैसा, वह मन्दिरमें पैठा है, वह बनारसमें रहा है।

९ उ। पड़ना, पावना, आना, ऐसी सब क्रिया अपादान कारकको चाहै हैं क्या नहीं?

उ। हाँ चाहै हैं; जैसा कि, वृक्षसे पत्ता पड़ा। है मैंने उससे पाया है। वह घरसे प्रयागको गया।

१० प्र। कौनसी क्रिया दो कर्मको चाहें?

उ। देना, सिखाना, इस भाँतिकी जितनी क्रिया हैं वे सब दो कर्मको चाहें; जैसा कि, तुम उसको धन देओ वह उसको व्याकरण सिखाता है।

११ प्र। कौनसी क्रिया अपादान और कर्मको चाहे?

उ। याचना, प्रार्थना, मांगना, ऐसी जितनी क्रिया हैं, वे सभी अपादान और कर्म कारकमें चाहें; जैसा कि, तुम्होंने ईश्वरसे क्षमा चाही। दरिद्री लोग भागवान्से धनको प्रार्थना करते हैं; जो कोई बुद्धिहीन होवे तो वह ईश्वरसे मांगे और वह उसे दिया जायगा।

---

३ पाठ।

असमापिका क्रियाके विषयमें।

१ प्र। वर्त्तमान असमापिका क्रिया कब उक्त होय?

उ। कर्त्ताके विषयमें कुछ समझ पड़नेसे असमापिका क्रिया उक्त होय; जैसा कि, साधु लोग ईश्वरका ध्यान करते, समस्त लोगनका कल्याण करने चाहते हैं।

२। कर्मके विषयमें कोई रीति समझनेसे, होते यह वर्त्तमान असमापिका क्रिया उक्त होय; जैसा कि, दिखौना नहीं होते वह सूत गया।

२ प्र। होने यह असमापिका क्रिया कभी सांज्ञिक क्रिया समझी जाय क्या नहीं?

उ। हाँ, वह सांज्ञिक क्रियाके स्थानमें पाई जाय; जैसा कि, हम सबके लिये उसको प्राण लग देनेको उद्यत होने चहिये।

३ प्र। नित्य असमापिका क्रिया कब उक्त होती है?

उ। जो कभी उसमें वर्त्तमान अन्तर्गत होय, तबभी क्रियाकी

असमाप्ति पर्य्यन्त, वह उक्त है; जैसा, काम करके२ प्राय आता है।

४ प्र। क्रियाविशेषण असमापिका क्रिया किस समयमें कही है?

उ। जब एक कर्त्ताके द्वारा अनेक बातें मिलें, तब यह असमापिका क्रिया कही है; जैसा कि, बालक अपनी सन्ध्याको काढ़करके घरको गया।

२। जो नानान् प्रकारकी आजने हारो क्रियाविशेष कर्त्ताके द्वारा किई होंय; जब उसके अधीन कोई क्रिया रहै, तभी सो क्रियाविशेषण असमापिका क्रिया कही जाय; जैसा कि, तुम्हारे आदर करनेसे वह आवेगा।

५। होनेसे क्रियाविशेषण कभी२ आशंसार्थके बदलेमें होय क्या नहीं?

उ। हाँ, जब कोई बात ठीक कही होय, जो कोई काम सिद्ध होगा, अथवा कोई फल प्राप्त होगा, जो दिई रीति उपस्थित होय, तभी; जैसा कि, तू मूर्ख होनेसे घिनावना होगा, अर्थात् जो तू मूर्ख होगा, तब घिनावना होगा।

४ पाठ।

सांज्ञिक क्रियाके विषयमें।

१ प्र। सांज्ञिक क्रिया किस प्रकारसे व्यापती है?

उ। सांज्ञिक क्रिया संज्ञाकी न्याई, और ए प्रत्ययान्त होनेसे मानका योग होय; जैसा, साधु लोग मरने मात्रसे स्वर्गमें जाते हैं।

२ प्र। नेके प्रत्ययान्त सांज्ञिक क्रिया किसके पासमें व्यापती है?

उ। लिये, कारण, निमित्त, इत्यादिके पासमें व्यापती है; जैसा, मैं बातचीत करनेके लिये आया हूं।

३ प्र। जेक प्रश्नयान्त सांशिक क्रियाको किसी२ समय गुणवाचक समझावे क्या नहीं?

उ। हाँ; जैसा, बालकपनकी अवस्था सीखनेका समय है।

४ प्र। किस् प्रकारसे किया जाय?

उ। क्रियाके पहिले क्या, वा क्यों, वा कौन कहनेसे प्रश्न होय जैसा, तुम् क्या चाहते हो? वह् क्यों आया है? वह् कौन आवता है?

५ प्र। निश्चित वाक्य कभी२ प्रश्नकी न्याई कहा जाता है क्या नहीं?

उ। हाँ; जैसा, साधु लोग क्या विनाशको पावेंगे, अर्थात् नहीं पावेंगे। मैं क्या विद्याको नहीं सीखूंगा? अर्थात् सीखूंगा।

---

५ पाठ।

परवर्तीके विषयमें।

१ प्र। परवर्तीके मध्यमें कौन२ शब्द संज्ञाके सम्बन्ध कारकके आगेमें होता है?

उ। तले, हाथ, सहित, सङ्ग, साथ, ऊपर, नीचे, पास, समीप, कारण, निमित्त, लिये, द्वारा, मध्य, बीच, परे, पहिले, पश्चात्, पीछे, आगे, निकट, सन्मुख, साम्हे, ये सब परवर्त्ती शब्द सम्बन्ध कारकके आगेमें होते हैं; जैसा कि, उसके तले, मेरे पास, तेरे सङ्ग।

२ प्र। परवर्तीके मध्यमें कौन२ शब्द सांशिक क्रियाके मध्यमें आये?

उ। हेतु, कारण, निमित्त, लिये, परे, पूर्व, पहिले, पीछे, पश्चात्, येही सब सांशिक क्रियाके सम्बन्ध कारकमें आवैं; जैसा कि, करनेके हेतु, होनेके पहिले, जानेके लिये; उठनेके पीछे।

३ प्र। परवर्त्तीके मध्यमें कौनर शब्द सम्बन्ध कारकको आपनेसे अधिकरण समझा जाय?

उ। मध्य, बीच, इन् दो शब्दोंमें समझा जाय; जैसा कि, सभाके मध्य, पानीके बीच।

४ प्र। अपादान कारक जिससे समझा जाय, ऐसा कोईर शब्द परवर्त्तीयोंमें है, क्या नहीं?

उ। हाँ है, पास, साथ, ये दोनो परवर्त्ती शब्दके परे, प्राप्त्यर्थ क्रिया रहनेसें, अपादान समझा जाय; जैसा उसके पास मने पाया, अर्थात् उससे पाया।

नवम खण्ड।

१ पाठ।

समासके विषयमें।

१ प्र। समास के प्रकार है?

उ। समास छः प्रकार है; जैसा।

१ द्वन्द्व, अर्थात् यौगिक शब्दके बिना दो तीन शब्दोंका मिलना; जैसा, कीट पतङ्ग पशु पक्षी इत्यादि।

२। बहुब्रीहि, अर्थात् कथित दो तीन पदोंका स्वार्थ त्याग करके तद्द्वारा जो कोई पदार्थका बोध होके पद२ में युक्त होय; जैसा कि, दुराचार, सर्व्वव्यापी।

३। कर्मधारय, अर्थात् गुणवाचक शब्दमें संज्ञाका योग; जैसा कि, महाराज *, महाबल, सर्व्वलोक, सर्व्वदिन, अतिचिन्तित।

४। तत्पुरुष, अर्थात् कारक नामयमान पदके साथ पदका मिलाप; जैसा, धनमत्त, वृक्षपतित, पालनकर्त्ता, भ्रातृस्नेह, कर्म्मकारी, प्रेमकारक, चिरस्थायी, दीनहीन, काशीवासी, विश्वेश्वर, देशाधीस।

५। द्विगु, अर्थात् संख्यावाचक पदके साथ शब्दका मेल; जैसा कि, त्रिभूवन, त्रिरात्र, चतुर्दिक्।

६। अव्ययीभाव, अर्थात् क्रिया विशेषणके साथ शब्दका मेल; जैसा, जावज्जीवन, समूहदान, नित्याशीर्वाद।

---

* समासमें आकारान्त शब्दके आकारका लोप होय; जैसा कि, महा और राजा इन् दोनोंका समास करनेसे संज्ञाके आकारका लोप होके महाराज शब्द सिद्ध होता है।

२ पठ।

सन्धि वर्णन।

१ प्रश्न। सन्धि किसको कहते हैं?

उत्तर। अक्षरोंके मेलको सन्धि कहते हैं।

२ प्र। सन्धि कै प्रकारकी है?

उ। खरसन्धि, व्यञ्जनसन्धि, विसर्गसन्धि इन् भेदोंसे सन्धि तीन प्रकारकी है।

खरसन्धि।

३ प्र। खरसन्धिके कितने अंश हैं?

उ। गुण, वृद्धि, दीर्घ, अन्तर्गत येही चार अंश खरसन्धिके हैं।

४ प्र। सन्धिमें किस२ खरको गुण होता है?

उ। इ ई उ ऊ ऋ ॠ इन् छः खरोंको गुण होता है; जैसा, इ गुण होनेसे ए होय, दृष्टान्त गज इन्द्र गजेन्द्र।

ई .... ए होय ...... परम ईश्वर परमेश्वर।

उ ... . ओ होय ...... महा*उत्सव महोत्सव।

ऊ .... ओ होय ...... सर्व ऊर्द्ध सर्वोर्द्ध।

ऋ .... अर् होय ...... परम ऋत परमर्त्त।

५ प्र। सन्धिमें किन२ खरोंको वृद्धि होती है?

उ। अ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ए ओ ऐ औ, इन् दश खरोंको वृद्धि होती है; जैसा कि।

अ वृद्धि होनेसे आ होय। दृष्टान्त यथार्थ याथार्थ्य।

इ .... ऐ होय ...... शिशु शैशव।

---

* गुण अथवा वृद्धि होनेसे आकारान्त शब्दके आकारका लोप होय।

ई वृद्धि होनेसे ऐ होय, दृष्टान्त धीर, धैर्य्य।
उ .... औ होय ...... गुरु, गौरव।
ऊ .... औ होय ...... शूर, शौर्य्य।
ऋ .... आर होय ...... कृपण कार्पण्य।
ए .... ऐ होय ...... तथा * एव तथैव।
ओ .... औ होय ...... महा † ओषधि महौषधि।
ऐ .... ऐ होय ...... महा ‡ ऐश्वर्य महैश्वर्य।
औ .... औ होय ...... उत्तम औषध उत्तमौषध।

६ प्र। दो स्वरोंकी दीर्घ सन्धि कब होय?

उ। जब दो स्वर समान इकट्ठे होंय, तब उन्होंका योग होनेसे दीर्घ होय; जैसा कि।

अ दीर्घ होनेसे आ होय, दृष्टान्त अद्य अवधि अद्यावधि।
इ .... ई होय ...... कवि इन्द्र कवीन्द्र।
उ .... ऊ होय ...... विधु उदय विधूदय।

७ प्र। अन्तर्गत विशेष स्वरका मेल होनेसे किस् प्रकारसे सन्धि होती है?

उ। सो इस् प्रकारसे होती है; जैसा कि।

इ और इय होय, दृष्टान्त इति आदि इत्यादि।
उ और ऊव होय ...... लघु आगमन लघ्वागमन।
ऋ और ऋर होय .... पितृ आगमन पित्रागमन।
ए अय् .. होय .... पै अस पयस्।
ऐ आय् .. होय .... नै अक नायक।
ओ अव् .. होय .... गो ईश गवीश।
औ आव् .. होय .... पौ अक पावक।

---

* † ‡ पछिली टीपको देखो।

३ पाठ।

हल् सन्धि।

१ प्र। हल् वर्णोंकी सन्धि किस प्रकारसे होती है?

उ। एक वर्गका, और वर्गके साथ मेल होनेसे हल्की सन्धि होती है सो इन् सब उदाहरणमें पाई जाती है।

१ तवर्गका अक्षर चवर्गके दूसरे अथवा तीसरे अक्षरमें मिल्के से सन्धि होय; जैसा।

त सन्धिमें च होय दृष्टान्त तत् चेष्टा तच्चेष्टा।

द .. ज होय .. सद् जात सज्जात।

त .. ठ होय .. तत् टीका तट्टीका।

२ प्र चतुर्थ वर्गके अर्थात् त वर्गके आगे एकके द्वितीय वर्गके स्वजातीय अक्षरकी बदली होके सन्धि होय; जैसा तत् शरीर तच्छरीर।

३ चौथा वर्ग लकारके पहिले होनेसे प्रत्येकको ल होय; यथा, सत् लोक सल्लोक।

४ जो सब वर्गोंका पहिला अक्षर स्वरवर्ण, वा अन्त्यस्थ वर्ण, वा अनुनासिक वर्ण, वा निज वर्णके तीसरे वा चौथे वर्णके पहिले होय; तब स्ववर्गके तीसरे वर्णसे बदली किया जाय; जैसा कि।

त स्वरके पहिले द होय, दृष्टान्त तत् अवधि तदवधि।

क वके पहिले ग होय .... वाक् व्यय वाग्व्यय।

५। त, क, इन् दोनो अक्षरोंके स्थानमें अनुनासिक वर्ण होय क्या नहीं?

उ। हाँ होय; जैसा कि।

त सन्धिमें न होय, दृष्टान्त तत् मध्यम तन्मध्यम।

क .... ङ होय . वाक् मनः वाङ्मनः।

३। अनुस्वारके परे वर्ग रहनेसे सानुनासिक वर्णकी सन्धि होनेसे कैसा होय?

उ। सो ऐसा होय; यथा, संकल्प सङ्कल्प, शंकर शङ्कर, संचित सञ्चित, संजय सञ्जय, शंतनु शन्तनु, संपूर्ण सम्पूर्ण, संभव सम्भव।

४। इससे परे ङ, ण, न, और छ, इन् सब वर्णोंके आगे स्वर रहनेसे इन्को द्वित्व होय क्या नहीं?

उ। हाँ होय; जैसा, सन् आत्मा सन्नात्मा वृक्ष छाया वृक्षच्छाया।

४ पाठ।

विसर्ग सन्धि।

१ प्रश्न। विसर्गान्त शब्दकी सन्धि किस् प्रकारसे होती है?

उत्तर। वह अनेक प्रकारसे होती है; जैसा।

: सन्धिमें श होय दृष्टान्त निः चिन्त निश्चिन्त। *

: .... ष होय .... धनुः टङ्कार धनुष्टङ्कार। †

: .... स होय .... मनः कामना मनस्कामना। ‡

: .... ओ होय .... अधः मुख अधोमुख। §

: .... र होय .... ज्योतिः वित् ज्योतिर्वित्। ‖

---

* च और छ इन दोनो अक्षरोंके पहिले विसर्ग रहनेसे श होय।

† ट और ठ इन् दोनो अक्षरोंके पहिले विसर्ग रहनेसे ष होय।

‡ त और थ इन दोनो अक्षरोंके पहिले विसर्ग रहनेसे स होय।

§ ह य व र ल ञ ण न ङ म झ ढ ध घ भ ज ड द ग ब इन् सब अक्षरोंके पहिले विसर्ग रहनेसे ओ होय।

‖ अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ञ ण न ङ म झ ढ ध घ भ ज ड द ग ब इन सब अक्षरोंके पहिले इकारान्त वा उकारान्त शब्दके परे विसर्ग रहनेसे र होय।

कोष।

अग्रसर,	जो आगे चले अर्थात् अगुवा।
अधिकन्तु,	औरभी, विशेषसे।
अनुनासिक,	नासिकाको लिये जिसका उच्चारण होय।
अनुस्वार,	विन्दुमात्र जो वर्ण।
अपभाषा,	निन्दित वाक्य।
अव्यय,	जिस शब्दके आगे कोई कारक नहीं रहने सके।
अहो,	आश्चर्य।
आकांक्षा,	इच्छा।
आकारान्त,	जिसके आगे आकार रहे।
आकृति,	आकार, स्वरुप, अवयव।
इतर,	दूसरा, भिन्न, छोटा, सामान्य।
उदाहरण,	दृष्टान्त।
ऊर्द्ध,	ऊपर।
एकवचन,	जिसमें एक ठौर समझा जाय।
एकांश,	एक भाग।
एवं,	ऐसे, और।
एवम्प्रकार,	इस भांति, इस प्रकार।
ओष्ठ,	होठ।
ओष्ठ्य,	जिस अक्षरका उच्चारण ओष्ठसे होय।
कण्ठ्य,	जिस अक्षरका उच्चारण कण्ठसे होय।
कारक,	संज्ञाकी प्रत्यय, कर्त्ता, कर्म इत्यादि; करनेहार।
कीट,	कीड़ा; दियाका मैल।

क्रिया, धातुका अर्थ।
क्लीव, नपुंसक।
खण्ड, एक वस्तुके अनेक भाग, टूक।
गम्य, जाने योग्य।
गम्यमान, जो समझा जाय।
गवीश, गौ पालनेहारा।
गाभी, गाय।
गोप, गाय चरावनेहारा।
गोपाल, गाय पालनेहारा।
गोपी, गोपकी स्त्री।
गोल, पात्र विशेष; कुण्डा; वर्त्तुलाकार, जैसा भूगोल खगोल।
गौड़, बङ्गदेश; ब्राह्मणकी जाति।
गौर, गोरा।
गौरव, मर्य्यादा।
गौरवान्वित, मर्य्यादा विशिष्ट।
घटना, रचना।
घटान, संख्याको अनेक प्रत्ययान्त करना; योग्य करना; न्यून करना, यथा, भाव घटाना।
घोटक, घोड़ा।
घोटकी, घोड़ी।
घोटा, घोटा, दण्ड विशेष।
घोष, बङ्गाली शूद्रकी एक जाति; अहीरोंका गांव।
घोषणा, स्पष्टकर्के कहना।
चन्द्र, चांद।
चन्द्रविन्दु, आधे चन्द्र सरीखा अक्षर।
चन्द्रिका, चाँदनी।

जङ्गम,	चलनेकी सामर्थ्य जिनको है वे सब।
जङ्गल,	वन।
ज्योतिः,	तेजः।
ज्योतिष,	गणित शास्त्र।
ज्योतिषी,	ज्योतिष्की विद्याको जो जाने।
ज्योतिर्वेत्ता,	ज्योतिषी।
तदुत्तर,	उसके पीछे; उसका उत्तर।
तनु,	सूक्ष्म, मिहीन; शरीर।
तानपूरा,	वाद्ययन्त्र।
तालव्य,	जिस अक्षरका उच्चारण तालुवेमें होय।
तेजस्कर,	तेजोमय, तेजका प्रकाशकर्त्ता।
तेजस्वी,	तेजोयुक्त।
तैल,	तेल।
दत्त,	जो दिया गया है।
दन्त्य,	जिस अक्षरका उच्चारण दांतोंमें होय।
दीर्घ,	ऊंचा, लम्बा।
दुहिता,	बेटी।
दृश्य,	जो देखा जाय।
दृश्यमान,	जो देखनेमें आवे।
धात्वर्थ,	क्रिया, क्रियाका मूल।
धारा,	प्रवाह, रीति।
धैर्य,	धीरता।
नग्न,	नङ्गा।
नम्र,	मृदु, कोमल।
नर,	पुरुष।
नरक,	पापका भोग करनेका स्थान।
नायक,	प्रापक; स्वामी।

निर्जीव,	मुआ, प्राणहीन।
पदार्थ,	शब्दका अर्थ, वस्तु।
पावक,	आग।
प्रकृत,	यथार्थ, सत्य।
प्रत्ययान्त,	पद जिसके आगे प्रत्यय है।
प्रभृति,	इत्यादि।
प्रश्न,	पूछ, जिज्ञासा, अर्थात् जाननेकी इच्छा।
प्राप्त,	जो पाया गया है।
प्राप्तर्थ,	जिसमें प्राप्तिका ज्ञान है।
प्रेरणार्थ,	जिसमें प्रेरणका ज्ञान है।
वर्ग,	क आदि म पर्यन्त जो पांच हैं।
वर्ण,	अक्षर।
वर्णमाला,	अकारादि हकार पर्य्यन्त जो अक्षरोंकी पङ्क्ति।
बहुवचन,	जिससे बहुतका ज्ञान होय।
विवेक,	विचार।
विभक्त,	पृथक्, अलग, जो बाँटा गया।
विभिन्न,	पृथक्, तितर बितर।
विसर्ग,	: दो बिन्दु।
विसर्गान्त,	जिसके अन्तमें विसर्ग होय।
बोधक,	ज्ञापक।
व्यग्र,	जो काम काजमें फसा होय।
व्यञ्जन,	अकारादि स्वरहीन जो वर्ण।
व्याप्त,	प्रकाशित, प्रगट।
भग्न,	फूटा।
भाव,	अभिप्राय, मर्म।
मूर्द्धन्य,	जिसका उच्चारण मस्तकसे होय।
मृग,	हरिण।

यथा,	जैसें।
युक्त,	मिला।
योजन,	चार कोश।
योजना,	घटना।
रक्त,	लोह; लाल।
रक्तपात,	लोह्र गिर्ना।
रक्तिमा,	लाली।
रजः,	धुलि।
रण,	युद्ध।
रुधिर,	लोह्र।
लग्न,	लगा।
शठ,	धूर्त्त, चतुर।
शब्दविपर्य्यायक,	जो शब्दका अनुगामी होके शब्दके अर्थको उलटा उत्पन्न करे।
शब्दानुवर्त्तक,	जो शब्दका अनुगामी होके केवल शब्दके अर्थ ही को सिद्ध करे।
शब्दोद्दीपक,	जो शब्दका अनुगामी होके शब्दके अर्थका प्रकाश करे।
शर,	बाण।
शव,	मृतक, लोथ।
शास्त्री,	शास्त्रके अर्थका ज्ञाता।
शिशु,	बालक, बच्चा।
शूर,	बीर, भट।
शैशव,	बाल्यावस्था, बालक पन।
शौर्य्य,	बीरत्व।
षट,	छः।
षोडश,	सोलह।

संख्या,	गिनती।
संख्यावाचक,	जिस्से संख्या जानी जाय।
संज्ञा,	शब्द, नाम।
संयोग,	मेल।
सङ्कल्प,	कामना, मानस।
सर्व,	सब।
सर्वाह्न,	सब दिन।
समूह,	अनेक।
सानुनासिक,	नासिकाके साथ मुखसे जिसका उच्चारण होय।
सामान्य,	साधारण।
सुभक्ष्य,	उत्तम खाद्य।
स्वत्व,	अधिकार।
स्वर,	अकारादि विसर्गान्त षोडश अक्षर।
स्वार्थ,	अपना, काम।
स्वत्व,	त्याग।
स्थावर,	स्थिर, अचल।
हत्या,	बध।
हत्यारा,	बधका कर्त्ता, बधक।
हय,	घोड़ा।
हलन्त,	व्यञ्जनान्त, जिस शब्दमें स्वर न होय।
क्षुद्र,	छोटा, अल्प, बौना।
क्ष्मा,	पृथिवी।
क्ष्मापति,	पृथिवीका स्वामी, अर्थात् राजा।